PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 2, ISSUE 5

प्रेमचंद के कथासाहित्य में नारी जीवन

प्रा. विजय लोहार,
सहायक प्राध्यापक,
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
मूलजी जेठा महाविद्यालय,
जलगांव, महाराष्ट्र **(भारत)**

हिंदी के महान साहित्यिक प्रेमचंद के कथा साहित्य का फ़लक व्यापक एवं बहुआयामी हैं| विज्ञान और तकनीक के तरह-तरह के आकर्षणों के बीच भी पाठक प्रेमचंद की कोई-न-कोई कहानी या उपन्यास पढ़ता हुआ मिल जाता है| यह सब उनके भीतर पैठे सच्चे मनुष्य और लेखक की चुम्बकीय शक्ति है, जो पाठक को उनकी रचनाओं की ओर खींच लती है| उन्हें योंही नहीं उपन्यास सम्राट कहा जाता है| इस सन्दर्भ में डॉ.आंनदप्रकाश दीक्षित जी ने बहुत ही सटीक लिखा कि,

> " प्रेमचंद हिंदी-उर्दू कथा साहित्य के गौरव थे| उनका कथा-साहित्य एक ऐसा प्रस्थान बिंदु है, जहाँ से हिंदी में मनुष्य की,उसकी आशाओं-आकांशाओं की,आस्था-अनास्था की,शील-सदाचार और भ्रष्टाचारकी,नैतिकता की,वैविध्यपूर्ण और व्यापक पहचान की शुरुवात होती है|" १

प्रेमचंद सजग रचनाकार थे| इसलिए उनका साहित्य समसामयिक समस्याओं की सही-सही पहचान देता है| मजदूर,किसान,दलित तथा नारी जीवन की भिन्न-भिन्न समस्याओं का जीवंत चित्रण उनकी मानवीय प्रतिबद्धता का प्रमाण है| गाँधीवादी चिंतन तथा प्रगतिवादी विचारधारा के प्रभाव स्वरुप आदर्श और यथार्थ की समयोचित लेखन प्रेमचंद का सबसे बड़ा लेखकीय गुण माना जाता है| उनके कथा साहित्य में नारी जीवन की व्यथा-कथा के साथ-साथ उसका सम्मान भी प्रकट हुआ है| प्रेमचंद नारीत्व की अंतिम परिणति मातृत्व में देखते हैं| उनका मानना था कि,

> " नारी केवल माता है|और उसके उपरांत वह जो कुछ है ,वह सब मातृत्व का उपक्रम मात्र | मातृत्व संसार की सबसे बड़ी साधना, सबसे बड़ी तपस्या,सबसे बड़ा त्याग और सबसे महान विजय है|"२

मध्यकालीन सामंती समाज में नारी शोषण की दशा बहुत दयनीय थी| तो, आधुनिककालीन पूँजीवादी समाज में नारी नए-नए पैंतरों के साथ शोषित हो रही थी| जिसकी ओर प्रेमचंद जैसा रचनाकार सर्वप्रथम दृष्टिपात करता है| प्रेमचंद ने नारी की ऐतिहासिक स्थिति का विश्लेषण करते हुए 'कुसुम' कहानी में लिखा "आदिकाल में स्त्री पुरुष की उसी तरह संपत्ति थी,जैसे गाय,बैल या खेतीबारी|पुरुष को अधिकार था स्त्री

को बेचे,गिरवीं रखे या मार डाले|...उसके आत्मसम्मान के भावों को मिटाने के लिए यह उपदेश दिया जाता था कि पुरुष ही उसका देवता है,सोहाग स्त्री की सबसे बड़ी विभूति है|आज हजार साल बीतने पर भी पुरुष के रस मनोभाव में कोई परिवर्तन नहीं हुआ| पुरानी सभी प्रथाएं कुछ विकृत या संस्कृत रूप में मोजूद है|" ३ नारी की दशा का यथातथ्य चित्रण करते समय सामंती मनोदशाओं और पूंजीवादी समाज की वास्तविकताओं को सामने रखा है| पूँजीवादी व्यवस्था में नारी के बाह्य स्वरूप में कुछ बदलाव नज़र आता है, क्योंकि उस व्यवस्था के फलस्वरूप परिवार के स्थान पर व्यक्ति का महत्त्व बढ़ा था| फिर भी, परिवार और सामाजिक स्तरों पर स्त्री जाति लाचार और पराधीन जीवन जीने के लिए अभिशप्त थी|

प्रेमचंद के समसामयिक सामाजिक एवं राजनितिक गहमागहमी में स्वतंत्रता और समानता का मूल्य प्रधान आवश्यकता मानी गई| प्रेमचन्द के कथासाहित्य में नारी का नैतिक रूप भी चित्रित हुआ तो अनैतिक जीवन भी, समाज सुधार के प्रयासों का प्रभाव भी उनके नारी विषयक दृष्टिकोण पर रहा| नारी की तत्कालीन दशा से प्रेमचंद अनभिज्ञ नहीं थे| सामाजिक और राजनीतिक फ़लकपर प्रेमचंद युग 'नारी उत्थान' का युग था| अनेक सामाजिक सेवक नारी दशा में बदलाव करने हेतु कार्य कर रहे थे| स्त्री दशा सुधार में बालविवाह प्रतिबन्ध, स्त्री शिक्षा की पहल, विधवा विवाह को प्रोत्साहन आदि कार्य उस समय के सामाजिक जीवन की पहचान है| तो राजनीतिक क्षेत्र में नारी आंदोलनों में सम्मिलित होने लगी थी| लेकिन स्त्री दशा सुधार का दायरा बहुत ही छोटा था| समाज में अनेक स्त्रियों की दशा और पराधीनता प्रेमचंद के साहित्य में प्रस्तुत हुई| प्रेमचंद का नारीसंबधी दृष्टिकोण अधिक वस्तुगत था|प्रेमचंद की नारी पात्र सक्रीय, संघर्षशील और सचेतन लगती है| उनका संघर्ष केवल नारी मुक्ति का संघर्ष नहीं है, तो सामंती मानसिकता में जी रहे समाज से, जातिगत व्यवस्था से कभी-कभी अपने ही मन से है|

प्रेमचंद के कथासाहित्य में नारी जीवन भिन्न-भिन्न स्तरों पर अभिव्यक्त हुआ है |नारी चरित्र के गुणदोषों के साथ अभिव्यक्त हुआ| प्रेमचंद द्वारा, नारी में विद्यमान साहस,त्याग,सेवा,प्रेम, करुणा, संयम और दृढ़ता जैसे उच्च मानवीय गुण भी दिखाए गए तो कहीं-कहीं उसकी ईर्षा,द्वेष,आभूषण प्रियता,रूढ़िवादिता, धर्मभीरुता और अंधविश्वास जैसे दुर्गुणों को भी सामने रखा गया |प्रेमचंद के कथा साहित्य में नारी जीवन संबंधी सहानुभूति व्यक्त की गई है|नारी जीवन के विभिन्न स्तर यहाँ दीख जाते हैं| स्त्री परिवार के भीतर स्वतंत्र नहीं थी, वह अनेक मानवीय अधिकारों से वंचित थी, जिसके कारण स्त्री का जीवन पशुवत् बन गया था| पति के मृत्यु के बाद स्त्री को वैधव्य का श्राप लेकर जीवन बिताना पड़ता था|प्रेमचंद की अनेक रचनाओं में विधवा स्त्री की त्रासदी अभिव्यक्त की गई है | 'वरदान' उपन्यास में ब्रजरानी और 'निर्मला' उपन्यास की 'कल्याणी' प्रातिनिधिक नारी चरित्र है, जो वैधव्य की पीड़ा को भोग रहे हैं| यह समस्या माँ, स्वामिनी,धिक्कार,बेटों वाली विधवा और मृतकभोज इन कहानियों में भी प्रस्तुत है| प्रेमचंद वरदान में लिखते हैं

> " उसका (ब्रजरानी का) सोहाग उसका जीवन है और सोहाग का उठ जाना उसके जीवन का अंत है| कमलाचरण की अकाल मृत्यु ब्रजरानी के लिए मृत्यु से कम न थी| उसके जीवन की आशाएं और उमंगें मिट्टी में मिल गई|"३

स्त्री की यह भी त्रासदी कि,दहेज़ के अभाव में अधेड़ उम्र के पुरुष से विवाह करने पर मजबूर हो जाती है, या कर दि जाती है| 'निर्मला', 'गबन', 'गोदान','सेवासदन', जैसे उपन्यासों और 'नया विवाह', 'दुराशा','निर्वासन', 'नरक का मार्ग' जैसी कहानियों में स्त्री जीवन को परिवार के भीतर जो अलग-अलग प्रताड़नाएँ झेलनी पड़ती है, उसका सही-सही वर्णन किया गया है| पारिवारिक जीवन में नारी की अनमेल विवाह, दहेज़ समस्या, पातिव्रत्य पर संदेह,वैधव्य जीवन और आर्थिक पराधीनता जैसी अनेक समस्याओं का रेखांकन प्रेमचंद ने अपने कथा साहित्य में किया है| वे स्त्री के आर्थिक एव सामाजिक अधिकारों के पक्षधर है| ' बेटों वाली विधवा' कहानी में पति निधन के बाद माँ का अपने लड़कों द्वारा जो अपमान होता है, उसके मूल में आर्थिक परावलंबता है| स्त्री-पुरुष के आर्थिक समानता का विचार प्रेमचंद के प्रगतिवाद की पहचान है |

स्त्री परिवार के भीतर ही प्रताड़ित-शोषित नहीं है तो उसका सामाजिक जीवन भी दुःखमय है| परिवार में घुट-घुटकर जीने वाली स्त्री जब किसी लाचारीवश वैश्या बन समाज में रहती है, तो समाज उसे हेय नजरों से देखता है| उनकी प्रतिष्ठा पर प्रश्नचिन्ह लगाये जाते हैं| वैश्या पथ पर जो स्त्री एक बार चली जाती है तो उसे पुनःसामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं होती| सेवासदन, वैश्या, दो कब्रे,ऐक्ट्रेस आदि रचनाओं में यह देखा जा सकता है| प्रेमचंद जहाँ एक ओर नारी की त्रासदी दिखाते हैं वही नारी की उच्छश्रृंखलता की परिणति को भी चित्रित करते हैं| स्त्री शिक्षा की पैरवी करने वाले प्रेमचंद शिक्षा के कारण पाश्चात्य जीवन पद्धति का अनुसरण करने वाली स्त्रियों का वास्तविक रूप समाज के सम्मुख रखते हैं| साथ ही, इन नारियों की स्वतंत्र और बिंदास सोच का लाभ उठाने वाले पुरुषों की स्त्री लोलुपता का पर्दाफाश किया है| दो सखियाँ,उन्माद और मिस पद्मा यह रचनाएँ इसके प्रमाण हैं| प्रेमचंद समाज के भीतर नारी मुक्ति पर चल रहे ढकोसलों पर व्यंग्य करते नज़र आते हैं| यहाँ तक कि, नारी मुक्ति की बात करने वाले अनेक उद्घोषक परिवार में अपनी ही बहिन और पत्नी को वह आज़ादी नहीं देते हैं,जो वह दूसरे परिवार की औरतों के लिए अपेक्षित मानते हैं| स्त्री-पुरुष प्रेम का उद्दात रूप उनके कथासाहित्य की अन्यतम विशेषता मानी जा सकती हैं| 'गोदान'में प्राप्त स्त्री-पुरुष के प्राकृत प्रेम संबंधों पर प्रेमचंद की दृष्टि बहुत-बहुत साफ है| मेहता और मालती के प्रसंग में मालती स्वच्छंद नारी है।लेकिन उसमें बदलाव की नूतन संभावनाएं लेखक द्वारा निर्माण कर दि गई है| लेखक के अनुसार मालती बाहर से तितली और अन्दर से मधुमक्खी है, लेकिन उसमें तितलीपन क्रमशः कम होता जाता है और मधुमक्खी के समान सेवा-कर्म में लग जाती है। वह प्रेम को शरीर की नहीं आत्मा की वस्तु मानती है तथा सेवा-त्याग एवं मानवतावादी दृष्टि प्रमुख हो जाती है। प्रेम यहाँ वासना से ऊपर उठा हुआ है|

सामाजिक जीवन में मौजूद नारी विषयक अनेक अंतर्विरोधों की अभिव्यक्ति प्रेमचंद के कथा साहित्य में उपलब्ध हैं| उनकी अनेक रचनाओं में चित्रित परिवेश और काल सामंती है, जिसमें नारी जीवन उस काल के

परिप्रेक्ष्य में वर्णित है| परंपरागत भारतीय आदर्शों का परिपालन करने वाली नारी चरित्र पातिव्रत्य, संस्कार, सेवा और परिवार हित को महत्त्व देती हैं| अनेक स्त्री पात्र विरोधी स्थितियों में भी अपनी दैहिक पवित्रता अक्षुण्ण रखती है| ये स्थितियां गांधीवाद के प्रभाव को अंकित करती है| प्रेमचंद ने विवाह प्रथा के वर्तमान रूप पर आक्रोश प्रकट किया है तो पाश्चात्य 'मुक्त भोग' की वृत्ति की तीखी आलोचना भी की है| जहाँ एक ओर प्रेमचंद नारी के हर तरह के शोषण का विरोध करते हैं वहीँ नारी को परंपरागत आदर्श मूल्यों से लैस भी देखना चाहते हैं|

वे नारी और पुरुष को समान मानने के पक्ष में हैं| नारी की सामाजिक - आर्थिक स्वतंत्रता पर प्रगतिवादी ऐंगल से अपने विचार को देखा जा सकता है| जिसमें नारी भले ही दलित घर की हो या सवर्ण परिवार की वह पददलित ही है| वैसे, उनके कथा साहित्य में अनेक अभिव्यक्त दलित महिलाओं का शोषण और संघर्ष भी एक अलग विचारणीय पहलू है | इस सन्दर्भ में 'सवा शेर गेहूं', 'सद् गति', 'ठाकुर का कुआं', 'कफन' जैसी कुछ प्रातिनिधिक रचनाओं का उल्लेख किया जा सकता है| उनके द्वारा स्त्री का आन्दोलनकारी रूप भी अभिव्यक्त हुआ है| 'कर्मभूमि' उपन्यास इसका अच्छा उदहारण है| वैसे तो, उन्होंने हर वर्ग,जाति और उम्र की स्त्रियों का कुशलतापूर्वक चित्रण किया है| मगर यह बात भी गौरतलब है जीतनी सफलता ग्रामीण,गरीब, मध्यवर्गीय और घरेलू नारियों के चित्रण में मिली है, उतनी अमीर,उच्चशिक्षित स्त्रियों के चित्रण में नहीं प्राप्त हो सकी है|

उपरोक्त विश्लेषण से प्रमाणित है, प्रेमचंद के कथा साहित्य में नारी जीवन के विभिन्न पहलू आदर्श और यथार्थ के धरातल पर अभिव्यक्त किए हैं| उनका नारी विषयक चिंतन काफी सुलझा हुआ है| उन्होंने नारी जीवन का उच्चतम स्तर नारीत्व,सतीत्व और मातृत्व माना है| प्रेमचंद के कथा साहित्य में नारी की आर्थिक स्वतंत्रता,उद्धार का सम्मान हुआ है, तो नारी की उच्छृ श्रुंखल अवस्था का और समाज की पुरुषप्रधान मानसिकता का खंडन विद्यमान है|

सन्दर्भ सूची :-

१) प्रेमचंद एक सिंहावलोकन, प्रा.ह.श्री.साने और डॉ.आंनदप्रकाश दीक्षित, प्रास्ताविक
२) गोदान, प्रेमचंद, पृ.७८
३) मानसरोवर, भाग दो,पृ.१९
४) प्रेमचंद, प्रतापनारायण टंडन,पृ.१२०